International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आने वाली सतंति के प्रति मिडिया व उत्तराधिकारियों की उत्तरदायी

डॉ. कुलदीप सिहँ, असिस्टेंट प्रोफेसर,
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,
सनराईज वि"वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)
DOI:euro.ijress.11321.32145

प्रस्तावनाः— संचार मानव जीवन का वह महत्त्वपूर्ण आधार स्तम्भ है जिसके द्वारा समाज में मानवीय संबंध बनते हैं और निरंतर विकसित होते हुए समाज का निर्माण करते हैं। संचार यानि दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच का संवाद, एक दुसरे के साथ सूचना का आदान प्रदान, आव–भाव एवं विचारों की सहभागिता। संचार के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले साधनों को मीडिया (माध्यम) कहा जाता है। मीडिया से तात्पर्य समाचारपत्र, पत्रिका, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि से है। मीडिया अथवा जनसंचार माध्यम किसी भी समाज या देश की वास्तविक स्थिति के प्रतिबिम्ब होते हैं। देश में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि स्तर पर क्या कुछ घट रहा है, इसे जन साधारण मीडिया के माध्यम से ही जान पाता है। जनसंचार के विभिन्न आयामों ने समस्त भूमंडल को अपनी परीधि मे ले लिया है।

भूमिकाः— लोकतंत्र में विधयिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका के बाद मीडिया को चौथा स्तम्भ माना जाता है। मोडिया में जहां समाचार पत्र, पत्रिका और रेडियो अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं वहीं आज के तकनीकी युग में टीवी, इंटरनेट, सिनेमा आदि भी बहुत अहम स्थान रखते हैं। आजकल की युवा पीढी अखबार पढने के लिए बेहद कम समय खर्च करते हैं, जबकि टेलिविजन देखने ओर इंटरनेट सफिंग के साथ अधिक समय बिताना पसन्द करते हैं।

रेडियो की बात करे तो आकाशवाणी का नारा ही "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'' है। रेडियो एवं टीवी के माध्यम से श्वेत व हरित क्रान्ति संभव हुई। मीडिया का उद्देश्य सूचना, शिक्षा, मनोरंजन करना था। वहीं आज इसका उद्देश्य पूंजी कमाना और सबसे श्रेष्ठ व तेज हाने की इच्छा दिखाई पड़ रही है।

1) क्या मीडिया वहों सिखाता है जो माता पिता या शिक्षक से सीख मिलती ह?
2) क्या मीडिया इसके विपरीत जानकारी दे रहा है ?
3) क्या मीडिया इनसे हटकर नई जानकारी दे रहा है ?

अतः माता पिता को निर्णय लेना होगा क्या सही है क्या गलत है। इस पर पूरे समाज को विचार करने की आवश्यकता है। मीडिया और अभिभावक मिलकर ही समाज में उभरती समस्याओं का निदान कर सकते हैं दोनों मिलकर आने वाली पीढी को सही एवं सभ्य समाज का नागरिक बना सकते

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हैं। जो कि भविष्य के कर्णधार बनकर देश व समाज को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने में सक्षम होंगे।

संचार मानव जीवन का वह महत्त्वपूर्ण आधार स्तम्भ है जिसके द्वारा समाज में मानवीय संबंध बनते हैं और निरंतर विकसित होते हुए समाज का निर्माण करते हैं। संचार यानि दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच का संवाद, एक दुसरे के साथ सूचना का आदान प्रदान, आव–भाव एवं विचारों की सहभागिता। संचार के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले साधनों को मीडिया (माध्यम) कहा जाता है। मीडिया से तात्पर्य समाचारपत्र, पत्रिका, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि से है।

मीडिया अथवा जनसंचार माध्यम किसी भी समाज या देश की वास्तविक स्थिति के प्रतिबिम्ब होते हैं। देश में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि स्तर पर क्या कुछ घट रहा है, इसे जन साधारण मीडिया के माध्यम से ही जान पाता है। जनसंचार के विभिन्न आयामों ने समस्त भूमंडल को अपनी परीधि में ले लिया है। मीडिया की शक्ति का आंकलन इसकी व्यापक पहुंच से किया जा सकता है किन्तु इसकी व्यापक शक्तियों एवं स्वतंत्रता के कारण मीडिया की देश व समाज के प्रति महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी है। इसलिए लोकतंत्र में विधायिका, कार्यपालिका एव न्यायपालिका के बाद मीडिया को चौथा स्तम्भ माना जाता है।

मीडिया के विभिन्न रूपों में से कुछ रूप अपनी पैठ ज्यादा बनाए हुए हैं। मीडिया में जहाँ समचारपत्र, पत्रिका और रेडियो अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं वहीं आज के तकनीकी युग में टीवी, इंटरनेट, सिनेमा आदि भी बहुत अहम स्थान रखते हैं।

इनमें टीवी का प्रचलन और वर्चस्व आधुनिक समाज को अधिक और तीव्र गति से प्रभावित कर रहा है, और अब इंटरनेट ने भी अपने पांव पसारने शुरू कर दिए हैं। वर्ष 2002 में किये गये एक राष्ट्रीय सर्वे में पाया गया था कि भारत में आम आदमी एक अखबार को पढ़ने के लिए मुश्किल से 32 मिनट खर्च करता है, जबकि टेलीविजन देखने के लिए सौं मिनट। युवा पीढ़ी कीं बात की जाए तो वे अखबार पढ़ने के लिए बेहद कम समय खर्च करते हैं, जबकि टेलीविजन देखने और इंटरनेट सर्फिंग के साथ अधिक समय बिताना पसंद करते हैं। इसी कारण आज मीडिया के नाम पर लोगों के मानस पटल पर अधिकतर टी.वी तथा इसमें भी टी.वी के कुछ चनलों का चित्र उभरता है। आधुनिक तकनीक तथा पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के चलते टी.वी कार्यक्रमों में आए बदलाव के कारण लोगों को टी.वी के नकारात्मक पक्ष ज्यादा दिखाई देने लगे हैं। जिस कारण संपूर्ण मीडिया जिसमें टीवी के साथ अन्य माध्यम भी आते है की प्रासांगिकता पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। मीडिया के प्रभावों की बात करें तो यह प्रस्तुति पर निर्भर करता है कि हम आम जनमानस को क्या परोस रहे हैं। यह सुनिश्चित है कि परासी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

गई सामग्री का असर उसके अनूकुल ही होता है।

रेडियो की बात करें तो आकाशवाणी का नारा ही "बहुजन हिताए बहुजन सुखाए'' है। आकाशवाणी ने भारत में आरम्भ से ही आम जनमानस को शिक्षित, सूचित एवं मनोरंजित करने का काम बड़ी ईमानदारी से सही ढंग से किया है और देश के विकास में अपनी अहम भूमिका निभाई है। अगर मुद्रित माध्यम की बात करें तो एक उद्धरण के अनुसार प्राचीन काल में महिलारोप्य राज्य के राजा अमरशक्ति के बच्चों को नैतिक शिक्षा एवं व्यावहारिक जीवन से सम्बंधित जानकारियां देने के लिए श्री विष्णु शर्मा द्वारा पंचतत्र की कहानियां रची गई थीं। साहित्य के साथ–साथ समाचारपत्र पत्रिकाओं ने भी अपने प्रकाशित लेखों व घटनाकमों के माध्यम से समाज को दिशा प्रदान करने में अहम भूमिका निभाई है। यहां तक की भारत की आजादी का अवलोकन करें तो समाचार पत्रों ने आन्दोलन को खड़ा करने में बहुत बड़ा योगदांन दिया है। टेलीविजन माध्यम के प्रथम चनल दूरदर्शन ने भारत निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई है और भारतवर्ष को शिक्षित, जागरूक बनाने के साथ स्वच्छ मनोरजन भी किया है। सूचना क्रांति के इस दौर ने अनेक मुश्किलों को आसान कर दिया है। कम्प्यूटर के आने से हर प्रकार की जानकारी बटन दबाते ही उपलब्ध हो सकती है, जो पहले दूर की कौड़ी लौने के बराबर हाती थी। आज इंटरनेट के माध्यमों से दुनिया भर की जानकारी अपने घर बैठे ही कम्प्यूटर पर प्राप्त की जा सकती है।

रेडियो एवं टीवी के माध्यम से श्वेत व हरित क्रान्ति संभव हुई, जिसने देश को विकसित बनाने में भरपूर योगदान दिया। टी.वी पर दिखाए जाने वाले 'हमलोग', 'रामायण', "उड़ान' जैसे कार्यक्रमों ने सामाजिकरण को बल दिया। ये भी मीडिया का ही प्रभाव है कि आज के बच्चे अपने अभिभावकों के सामने मूंह मोडकर बड़ी बेबाकी के साथ वो बात कह जातें हैं.जो कहना आसान नहीं है। मीडिया के प्रभाव के चलते ही इसके विभिन्न माध्यमों द्वारा ज्ञानवर्धक जानकारियां प्राप्त कर बच्चे सफलता हासिल करते हैं और इस मीडिया के प्रभाव के चलते आज बच्चे वक्त से पहले जवान हो जाते हैं। वे सीधे शिशु अवस्था से किशोर अवस्था में पहुंच जाते हैं। मीडिया का इंटरनेट रूप जहाँ आज सूचना का सबसे तीव्र व सशक्त माध्यम है, वही इसके द्वारा प्रसारित की जा रही "सुसाईड वेब–साईट' से प्रेरित होकर आज के बच्चों व युवाओं में खुदकशी की घटनाएं बढ़ रही है। मीडिया के प्रभाव के चलते आज लोग जब भ्रमण पर निकलते हैं या इकटठे होते हैं तो उनकी चर्चा के महाभारत व शेक्सपीयर के पात्रों की बात न होकर केतकि, कमोलिका या किसी विदेशी कलाकार के बारे में चर्चा होती है।

व्यस्तता भरे जीवन में मीडिया का बच्चों के मस्तिष्क पर पड़ने वाला प्रभाव अभिभावकों की चिन्ता का विषय बनता जा रहा है। इसके लिए मीडिया पर आरोप लगाया जाता है कि आने वाली पीढ़ी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

को पथ भ्रष्ट करने में मीडिया की भूमिका है।

मीडिया के प्रभाव के विषय में अभिभावकों के समूह से की गई बातचीत से जो तथ्य सामने आये हैं, उनमे अभिभावकों ने कुछ टी.वी चौनलों का हवाला देते हुए व इसके दुष्परिणामों को गिनाते हुए संपूर्ण मीडिया को आरोपित किया, जबकि टी.वी मीडिया का एक पहलू है। इसके अन्य माध्यमों के बारे में बहुत कम अभिभावकों ने बात की। इस बातचीत से एक बात और खुलकर सामन आई कि स्वयं अभिभावक इससे अधिक और सकारात्मक प्रभावित हैं। आज प्रत्येक माता पिता अपने बच्चों को 3 साल की उम्र में ही रियल्टी शो में नम्बर वन पर देखना चाहता है, बच्चों में प्रतिभा को निखारने के लिए हरसंभव प्रयास करता है ताकि उसका बच्चा किसी भी क्षेत्र में पोछे न रहे।

एक शिक्षण संस्थान के होस्टल में रह रहे छात्रों में होने वाली आपसी बातचीत पर किये गये सर्वे के दौरान ये तथ्य सामने आये कि आज टी.वी से प्रभावित युवा वर्ग में चर्चा का विषय राजनैतिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक न होकर प्रेम–प्रसंग, फिल्मी पात्रों के रहन सहन की चर्चा होती है और ये भी मीडिया का ही प्रभाव है कि हम जो योग, संस्कृति को लगभग भूल चुके थे, उसे फिर से अपने जीवन में ग्रहण कर सवेरे–सवेरे पार्कों, घरों की छतों पर योग साधना कर रहे हैं।

आज पश्चिमी सभ्यता व बाजारीकरण के प्रभाव के चलते मीडिया म खासकर इसके टी.वी, इंटरनेट रूप में काफी बदलाव आया है। इस मीडिया का उद्देश्य सूचना, शिक्षा, मनोरंजन करना था वही आज इसका उद्देश्य पूंजी कमाना और सबसे श्रेष्ठ व तेज होने की इच्छा दिखाई पड रही है। जिसके चलते मीडिया अपने दायित्व से भटकता सा नजर आ रहा है। दूसरा तकनीक का प्रयोग सही नहीं हो पा रहा है। पहले हमारे पास तकनीक नहीं थी लेकिन मीडियाकर्मी सही रूप से उद्देश्य की पूर्ति करते थे व लोगों को सही सूचनाएं, स्वस्थ मनोरंजन उपलब्ध कराते थे। आज मीडिया के पास उच्च तकनीक है लेकिन इसका इस्तेमाल ठीक ढंग से करने की बजाए इससे मीडिया कर्मियों में आलस्य आ गया है। जिसके कारण मीडिया की गुणवत्ता पर काफी असर पड़ा है। कुल मिलाकर मीडिया के बारे में लोगों द्वारा एक धारणा बन गई है कि 100 बार अच्छा काम करने वाले को इतना प्रोत्साहन नहीं मिलता जितना 'एक बार गलती करने वाले को अपमान मिलता है। ऐसा ही कुछ मीडिया की स्वयं की छवि के साथ हो रहा है। लोग इसकी अच्छाइयों को न देखकर इसकी बुराइयों को ज्यादा देख रहे हैं।

मीडिया ने आज समाज में लोगों के दिल और दिमाग को परिवर्तित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। जहाँ ये माध्यम शिक्षा देने, सूचना वितरण करने तथा विकास के राह पर चलने के लिए हमें प्रेरित कर सकने की क्षमता रखते हैं, वहीं ये इसके विपरीत भी कार्य कर सकते हैं। अतः मीडिया में कार्यरत लोगों को (जो अभिभावक भी हो सकते हैं) के लिए जरूरी हो जाता है कि वे

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इलैक्ट्रोनिक माध्यम को कुछ ऐसा बनाए कि यह मीडिया समाज के प्रत्येक वर्ग के विकास करने में अपना सहयोग दे सके। बच्चे समाज व देश का. भविष्य होते हैं इनके द्वारा भावी समाज का निर्माण होता है। बच्चा शिशु रूप के दौरान जो सिखता व समझता है, वही उसके व्यक्तित्व के निर्माण का आधार बनता है और अगर बच्चे को अच्छी शिक्षा मिले तो बेहतर समाज को निर्माण व विकास में सक्रिय भागीदारी कर सकता है। बच्चों की शिक्षा के विषय में प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख भी किया गया है कि 'मातृमान, पितुमानाचार्यवान पुरुषों वेद' यानि जब तीन उत्तम शिक्षक, माता–पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान हो सकता है। बच्चे प्रारंभिक समाजिक एवं व्यावहारिक शिक्षा अपने माता–पिता से प्राप्त करते है। फिर विद्यालय में अपने शिक्षक से किताबी, तकनीकी ज्ञान प्राप्त करत है। इसके साथ–साथ वह कुछ जानकारियां अपने मित्र मण्डली से भी सीखत है। आज समाज के बदलते स्वरूप के चलते बच्चों में सूचना शक्ति के लिए जिज्ञासाएं और बढ़ी हैं। जिसकी पूर्ति के लिए पिछले 40–50 वर्षों से एक नवीन प्रकार का शिक्षक जिसे हम मीडिया कहते हैं, योगदान दे रहा है। जो जानकारी बच्चे को माता–पिता, शिक्षक व दोस्तों से नही मिल पाती उसकी पूर्ति मीडिया कर रहा है। इस कारण मीडिया को लेकर तीन तरह की स्थिति उत्पन्न हुई हैं:–

1. क्या मीडिया वही सिखाता है जो माता पिता या शिक्षक से सीख मिलती है?
2. क्या मीडिया उसके विपरीत जानकारी दे रहा है?
3. क्या इनसे हटकर नई जानकारी दे रहा है?

अतः माता–पिता को ये निर्णय लेना होगा क्या सही है क्या गलत है? इस पर पूरे समाज को विचार करने की आवश्यकता है। साथ हीं मीडिया भी जो आज चकाचौंध की दुनिया में अपने कर्तव्य को भूलता नजर आ रहा है उसे समय के अनुकूल बदलाव लाने की जरूरत है। विज्ञापन के माध्यम से सिर्फ पैसा कमाने की बजाए आमजन व बच्चों को सही जानकारी व स्वच्छ मनोरजन कराना होगा ताकि प्रत्येक बच्चे व अभिभावक इससे प्रेरित होकर जागरूक बन सके व मीडिया का इस्तेमाल कर समाज के निर्माण व विकास में अपनी भूमिका निभा सके।

निष्कर्ष:– अन्ततः पूर्व में किये गये शोध बताते ह कि समाज के अलग अलग वर्गों पर मीडिया का प्रभाव अलग अलग रुप से. पड़ता है। इन वर्गों में जीवनशैली के आधार पर मुख्यतः ग्रामीण व शहरी वर्ग आते हैं। ग्रामीण वर्ग के परिवार मीडिया का प्रयोग मनोरजन हेतू करते हैं जबकि शहरी वर्ग मनोरंजन के साथ साथ सूचना को भी अहमियत देते है। इसी तरह आयु, लिंग, कार्य आदि के आधार पर भी वर्गीकृत हैं। अतः मीडिया को इन्हें ध्यान में रखते हुए कार्यकम बनाने चाहिए। मीडिया द्वारा विभिन्न समूहों को लक्षित कर कार्यक्रमों की रचना में नैतिक मूल्य तथा विवेकशील मानव बनाने की

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 1, January- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

क्षमता पैदा करन वाले सन्देशों का समावेश होना आवश्यक है।

मीडिया समयानुसार अपना आंकलन कर समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का सतत प्रयास करता रहे।

मीडिया अपने कर्तव्यबोध के अनुकूल प्रस्तुति देता है तो अभिभावक कों अपने बच्चों को कार्यक्रम देखने से रोक लगाने की आवश्यकता नही रहेगी। इस प्रकार मीडिया और अभिभावक मिलकर ही. समाज में उभरती समस्या का निदान कर सकते हैं। दोनों मिलकर आने वाली पीढ़ी को सही एवं सभ्य समाज का नागरिक बना सकते हैं जो कि भविष्य के कर्णधार बनकर देश व समाज को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने में सक्षम होंगे।

संदर्भ सूची

डॉ जानकी : किशोरावस्था पर मीडिया का प्रभाव समस्या एंव समाधान 2004. (9 पाठक राममोहन : इलेकट्रोनिक माध्यम रेडियो एंव दूरदर्शन यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन 1998, गुप्ता ओम : मीडिया और समाज कनिष्का पब्लिकेशन 2002, मीडिया और नेटवर्क संस्कृति : वाणी प्रकाशन 2007, रावत शोभिता जैन : भारत में परिवार विवाह और नातेदारी 2004, कांति विमलेश : भाषा साहित्य और संस्कृति – ओरियंट ब्लैकस्वैंन 2007, आलोक टी डी एस : सांस्कृतिक पत्रकारिता हरियाणा साहित्या अकादमी 2003, 69 मीडिया विमर्श : सितम्बर–नवम्बर 200, आशो वर्ल्ड– : फरवरी 2008, संचार माध्यम : अप्रैल–जून 1997, आंचलिक पत्रकारः नवम्बर 2007 Communication Today – 20, Kumar Arvind: The electronic media – Anmol publications 1999